16 फरवरी, 2015 को इंदौर में 30वें अंतर विश्वविद्यालयीन राष्ट्रीय युवा उत्सव के समापन समारोह के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

पांच दिवसीय अंतर विश्वविद्यालयीन राष्ट्रीय युवा उत्सव के समापन दिवस के अवसर पर यहां आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। मैं आयोजकों को हार्दिक धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने मुझे यहां आमंत्रित किया। इंदौर आकर मुझे हमेशा खुशी होती है क्योंकि मेरे लिए यह घर वापस आने के समान है। परंतु इस बार यहां आना मेरे लिए बहुत खास है क्योंकि मुझे इस ऐतिहासिक शहर में अपने देश के विभिन्न क्षेत्रों के सैकड़ों युवा छात्रों से मिलने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

मैं इस पांच दिवसीय उत्सव में दूर-दूर से भाग लेने आए आप सभी प्रतिभागियों के उत्साह की सराहना करती हूं। आपकी लगन, प्रतिबद्धता और प्रतिस्पर्द्धा की भावना आपको यहां लाई है ।

प्रिय मित्रो, मुझे विश्वास है कि यहां रहकर आपका एक-दूसरे के साथ विचारों का आदान-प्रदान हुआ होगा और आपने एक-दूसरे के राज्य और क्षेत्र के अनुभव बांटे होगे। मालवा क्षेत्र यहां के लोगों की गर्मजोशी और परंपरागत आदर-सत्कार के लिए जाना जाता है । मुझे विश्वास है कि यहां आपका प्रवास सुखद रहा होगा। इन उत्सवों के माध्यम से न केवल देशभर से युवा और प्रतिभाशाली छात्र एक जगह इकट्ठा होते हैं, बल्कि उल्लास और उमंग का माहौल भी बनता है। ऐसे आयोजनों से न केवल आपका नज़रिया बल्कि आपकी सोच भी व्यापक होती है जो आपके व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है । यहाँ के लोगों को पिछले पांच दिनों के दौरान आपके द्वारा पेश की गई समृद्ध और जीवंत कलात्मक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को देखने का मौका मिला है।

मैं भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली के तत्वावधान में इस उत्सव के आयोजन के लिए देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की सराहना करती हूँ। इस अवसर पर मैं भारत सरकार के युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय द्वारा इस उत्सव के आयोजन के लिए की गई पहल की सराहना करती हूँ। जैसा कि आप सब जानते होंगे, रानी अहिल्या देवी इस क्षेत्र की परोपकारी शासक के रूप में पूजी जाती हैं। इतिहास के पन्नों को पलट कर देखने पर पता चलता है कि प्रख्यात और अमर कवि और नाटककार कालिदास भी इसी क्षेत्र के निवासी थे। तानसेन जैसे दिग्गज गायक और उस्ताद अल्लाउद्दीन खान, उस्ताद अमजद अली खान, माखन लाल चतुर्वेदी, हरि शंकर परसाई और शरद जोशी जैसे सुप्रसिद्ध कलाकार और कवि भी इसी राज्य से सम्बद्ध हैं ।

मित्रो, किसी भी देश की जनसँख्या का सबसे सक्रिय भाग वहां के युवा होते हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे देश में 27 प्रतिशत से भी अधिक लोग 15-29 वर्ष के युवा हैं। आने वाले वर्षों में जहाँ विकसित देशों को कार्यबल में बड़ी उम्र वाले लोगों की संख्या अधिक होने की चुनौती का सामना करना पड़ेगा, वहीं भारत में जनसांख्यिकीय स्थिति बहुत अनुकूल होगी। अनुमान है कि वर्ष 2020 तक, भारत की जनसंख्या में मध्यम आयु 28 वर्ष होगी जबकि अमरीका में मध्यम आयु 38 वर्ष, चीन में 42 वर्ष और जापान में 48 वर्ष होगी। हमारे जैसी प्रगतिशील अर्थव्यवस्था के लिए यह शुभ संकेत है और जैसा कि विशेषज्ञ भी मानते हैं कि अगले 10 वर्ष में

अमरीका, चीन और जापान के बाद चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भारत की होगी। निस्संदेह यह जनसांख्यिकीय लाभांश हमारे लिए एक बड़ा मौका है जिसका इस्तेमाल हम अपने देश के सर्वांगीण और समावेश विकास के लिए कर सकते हैं। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए, भारत सरकार ने राष्ट्रीय युवा नीति की शुरुआत की है। इस नीति में युवाओं के समग्र और सर्वांगीण विकास के प्रति देश की प्रतिबद्धता दोहराई गई है ताकि वे तन और मन से सबल बनें। सौ से भी अधिक साल पहले, स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि **हमारे देशवासियों में दृढ़निश्चय, फौलादी शरीर और कुशाग्र बुद्धि होनी चाहिए।** मैं भी यही मानती हूँ कि तभी हमारा देश राष्ट्रीय पुनः संरचना और सामजिक परिवर्तन के चुनौतीपूर्ण कार्य को पूरा कर पायेगा।

मित्रो, शिक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना निस्संदेह आवश्यक है किन्तु खेलों, कला, शिल्प, वाक् कला आदि जैसी प्रतिस्पर्धाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने से व्यक्तित्व का समग्र विकास होता है। ऐसे उत्सव मनोरंजन करने के साथ-साथ स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और संबंध स्थापित करने, सामाजिक समावेश, महिला पुरुष समानता और युवा विकास की भावना को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

खेलों के क्षेत्र में हमारे युवा पहले ही अपनी छाप छोड़ रहे हैं। मुझे यह जानकर ख़ुशी हुई है कि हमारे देश की महिलाएं विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं में अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं। मुझे बताया गया है कि इस पांच दिवसीय उत्सव में संगीत, नृत्य, साहित्यिक समारोह, थिएटर और ललित कलाओं की पांच विधाओं के अंतर्गत 24 प्रतिस्पर्धाएं आयोजित की गई जिनमें 69 विश्वविद्यालयों ने भाग लिया। मुझे यह जानकर भी ख़ुशी हुई है कि आधे से भी अधिक प्रतिभागी महिलाएं हैं। मुझे पता चला है कि इन प्रतिस्पर्धाओं में शास्त्रीय और लोक नृत्य और क्ले मॉडलिंग जैसे कुछ परम्परागत कला और शिल्प प्रतिस्पर्धाएं भी शामिल थीं। जैसा कि आप सब जानते हैं, हम सब एक जीवंत कलात्मक और सांस्कृतिक परम्परा के उत्तराधिकारी हैं। अनादि काल से ही भारतीय कला और शिल्प विश्व भर में लोगों को प्रभावित करते आये हैं। मैं कहना चाहूंगी कि प्रत्येक क्षेत्र और प्रत्येक राज्य में कला, संगीत, नृत्य, साहित्य और संस्कृति का अद्वितीय और विशेष रूप देखने को मिलता है। यही विविधता हमारी शक्ति है और इस महान विरासत का भागीदार होने के नाते आपको इसे बढ़ावा देने के साथ-साथ इसे भावी पीढ़ियों के लिए संजोना भी है।

संस्कृति देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संस्कृति मंत्रालय हमारी समृद्ध और विविधतापूर्ण कलात्मक और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और इसे संजोने में महत्वपूर्ण भूमिका रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर, ललित कला अकादमी, संगीत नाटक अकादमी और साहित्य अकादमी हमारी महान विरासत को बढ़ावा देने में अमूल्य योगदान कर रहे हैं। नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा जो विश्व की एक प्रमुख थिएटर संस्था है, थिएटर के सभी पहलुओं में छात्रों को प्रशिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है ।

हमारे देश में शास्त्रीय और लोक नृत्य की समृद्ध परंपरा है। भारत में नृत्य की परंपरा 2000 वर्षों से भी अधिक पुरानी है और यह पौराणिक कथाओं और क्लासिक साहित्य पर आधारित है । हमारे

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र भी स्थानीय संस्कृतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं । ऐसी अन्य कई संस्थाएं और संगठन हैं जो देश में परंपरागत कला और संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं । युवाओं को इस परंपरा के संवर्द्धन और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी । जैसा कि आप सब जानते हैं कि भारत सरकार ने युवाओं के लिए विभिन्न कार्यक्रम और योजनाएं तैयार की हैं। राज्य सरकारें भी युवाओं के लिए नीतियों और कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आपको केन्द्र और राज्य सरकारों तथा अन्य संस्थाओं द्वारा विशेष रूप से कला और संस्कृति के क्षेत्र में दिए जा रहे प्रोत्साहनों के साथ-साथ फैलोशिप के रूप में उपलब्ध विभिन्न अवसरों का पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहिए ।

आप सब ने इस राष्ट्रीय उत्सव में भाग लेने के लिए अपने स्कूल, कॉलेज, जिले और राज्य में आयोजित प्रतिस्पर्द्धाओं में कई सफलताएं अर्जित की होंगी । ऐसे राष्ट्रीय उत्सव में भाग लेना भी गर्व की बात है। मुझे विश्वास है कि आप इस शहर और यहां के लोगों की मधुर स्मृतियां अपने साथ लेकर जाएंगे। मैं आपके उज्ज्वल भविष्य और आपके सभी कार्यों में सफलता की कामना करती हूं। मैं पुनः देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डी.पी. सिंह तथा इस उत्सव के आयोजन से संबद्ध सभी लोगों के प्रति आभार प्रकट करती हूं ।

धन्यवाद ।